उत्तर-पुस्तिका-4

हिंदी रतन

BLUE SKY
BOOKS INTERNATIONAL
2647, Roshan Pura, Nai Sarak,Delhi-110006
Phone : 98994 23454, 98995 63454
E-mail : blueskybooks@gmail.com

अध्याय-1

2. (क) प्रात:काल की बेला में मन झरनों के समान गीतों में बहता रहता है। (ख) स्निग्फ चाँदनी में कवि का परियों को निकट बुलाने का मन करता है। (ग) पर पीड़ा को देखकर कवि का मन घबरा जाता है। (घ) परोपकार करने से धरती पर स्वर्ग उतर सकता है। **3.** (क) मुदित हृदय से **वंशी लेकर**, **वन को गीत** सुनाता हूँ मैं। (ख) मेरे मन का **फूल निरंतर**, गुण-सौरभ **फैला जाता** है। (ग) **अच्छा होगा** इस जग में फिर, **उपकारी** बनकर आना। **4.** प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से कवि कहता है कि यदि पृथ्वी पर प्रत्येक मानव का लक्ष्य परोपकार हो जाए तो यह धरती स्वर्ग के समान बन जाएगी। **भाषा-बोध: 1. सवेरा=**प्रात:, भोर; **आकाश=**नभ, आसमान; **जंगल=**वन, अरण्य; **मनुष्य=** मानव, जन; **फूल=**कुसुम, पुष्प। **2.** स्वयं करें। **3.** काल-क्रिया करने में जो समय लगता है, उसे काल कहते हैं। काल के तीन भेद होते हैं—भूत, वर्तमान, भविष्यत्। **4.** (क) वर्तमान काल (ख) भविष्यत् काल। **करके सीखिए-**स्वयं करें।

अध्याय-2. दो बैलों की कथा

2. (क) गया ने उनके आगे रूखा-सूखा भूसा डाल दिया था तथा नई जगह, नए लोग होने के कारण वे वहाँ से भाग गए। (ख) गया के घर से भागने में हीरा-मोती की मदद एक छोटी-सी लड़की ने की। उसकी सौतेली माँ उसे बहुत मारती-पीटती थी। बैलों की दुर्दशा देखकर लड़की को उन पर दया आती थी। (ग) दोनों ने हिम्मत से काम लिया। साँड ने हीरा पर वार किया तो मोती ने पीछे से उस पर सींगों से चोट की। साँड घबरा गया। दोनों ने मिलकर उसको जख्मी कर दिया। साँड भागा। हीरा-मोती ने दूर तक उसका पीछा किया। साँड बेदम होकर गिर पड़ा। (घ) कांजीहौस को तोड़ने एवं सभी जानवरों को भगा देने में सहायक होने के कारण उनसे बुरा व्यवहार किया गया। (ङ) हीरा-मोती को लगा कि रास्ता तो जाना-पहचाना है। वही खेत, वही बाग, वही गाँव-जिस रास्ते से गया उन्हें ले गया था। हमारा घर पास ही है—ऐसा सोचते ही दोनों की चाल तेज हो गई, सारी कमजोरी गायब हो गई। दोनों में न जाने कहाँ से दम आ गया और वे तेजी से भागे। दोनों भागकर सीधे अपने घर अपने थान पर जा खड़े हुए। **3.** (क) झूरी की पत्नी का भाई (ख) छोटी लड़की ने (ग) मटर के (घ) हीरा ने। **4.** (क) ✗ (ख) ✓ (ग) ✗(घ) ✓ (ङ) ✗ **भाषा-बोध: 1. गड्ढा=**गड्ढे, **हड्डी=**हड्डियों, **गाड़ी=**गाड़ियाँ, **घोड़ा=**घोड़े, **पत्नी=**पत्नियाँ, **लड़की=**लड़कियाँ, **बकरी=**बकरियाँ, **रस्सी=**रस्सियाँ। **2.** स्वयं करें। **3.** (क) साला (ख) सहनशील (ग) नकेल (घ) कांजीहौस। **करके सीखिए-**स्वयं करें।

अध्याय-3. अमरनाथ की यात्रा

2. (क) पहलगाँव के दर्शनीय स्थल बाइसरन, गोल्फ, मैदान, शिकारगाह, आरू आदि हैं। (ख) लेखक अपने मित्रों के साथ शेषनाग चार बजे पहुँचे। (ग) अमरनाथ गुफा समुद्र तल से 12,756 फुट की ऊँचाई पर स्थित हैं। (घ) प्राकृतिक रूप में हिम से शिवलिंग बनता है। (ङ) पुराणों के अनुसार अमरनाथ यात्रा का प्रचलन ईसा से भी एक हजार वर्ष पहले से चला आ रहा है। पौराणिक कथा के अनुसार अमरनाथ की गुफा में बैठकर शिवजी ने पार्वती को अमर कथा सुनाई थी। कहा जाता है कि इस कथा को सुनने से व्यक्ति अमर हो जाता है। यहाँ पर पहुँचकर यात्री अपने आप को ईश्वर के निकट पाता है। **3.** (क) चार (ख) लिद्दर (ग) 16 (घ) 12,756 (ङ) कबूतरों। **4.** (क) ✓ (ख) ✓ (ग) ✗ (घ) ✓ (ङ) ✗ **भाषा-बोध : 1. जीवन**=मृत्यु, **अनेक**=एक, **कठिन**=सरल, **आरंभ**=समाप्त, **बाहर**=अंदर, **आगे**=पीछे **2. दुनिया**=संसार, **कार्य**=काम, **साहस**=निडर, **प्रसिद्ध**=मशहूर, **शक्ति**=ताकत, **खाना**=भोजन। **3. जम्मु**=जम्मू, **स्वानिय**=स्थानीय, **बीस्कुट**=बिस्कुट, **रमणिय**=रमणीय, **शिवलींग**=शिवलिंग, **पौराणीक**= पौराणिक। **4. जिसका अंत न हो**=अनंत, **जो आँखों के सामने हो**=प्रत्यक्ष, **जो दूसरों से ईर्ष्या करता हो**=ईर्ष्यालु, **सब राष्ट्रों से संबंधित**=अन्तर्राष्ट्रीय जो, **भारतीय नहीं हो**=विदेशी। **करके सीखिए-**स्वयं करें।

अध्याय-5 समय का महत्व

2. (क) स्कूल से घर आते ही रवि प्राय: बस्ता एक ओर पटकता और जोर से चिल्लाता था। (ख) रवि की मम्मी उसके बारे में सोचने लगी थीं कि वह जिद्दी हो गया है। (ग) आज रवि घर पर सुबह दादी से लड़कर स्कूल गया था, उस पर हुक्म चला रहा है। (घ) देर से उठने पर रवि ने जल्दी-जल्दी ब्रश किया और कपड़े पहन लिए। न शौचालय गया और न ही स्नान किया। (ङ) स्कूल बस छूट जाने पर रवि को सब कुछ खोया-खोया-सा लग रहा था। उसके घर वापस आने पर किसी ने उसे ढाढ़स नहीं बँधाया। सभी अपने-अपने कामों में लगे रहे। तब वह समझ गया था कि सुधरकर ही वह सही दिशा प्राप्त कर सकेगा। अन्यथा इस लेट-लतीफी का कोई और उपचार नहीं है। उसे समय के महत्त्व का ज्ञान हो चुका था। वह समय का पालन करने के लिए अपने मन में दृढ़ता ला चुका था। **3.** (क) स्कूल (ख) सवा सात (ग) चॉकलेट (घ) आँसू (ङ) समय। **4.** (क) रोते हुए घर आना पड़ा। (ख) सोफे पर बैठ गया। (ग) काम नहीं करता। (घ) अभी थोड़ी ही दूर गई थी। (ङ) मिट्टी में मिल गए थे। **भाषा-बोध: 1.** स्वयं करें। **2. शर्मींदा**=शर्मिंदा, **चीड़चिड़ा**=चिड़चिड़ा, **लक्षय**=लक्ष्य, **प्रतीदिन**= प्रतिदिन, **सूईयाँ**=सूइयाँ, **भाँती**=भाँति, **प्रशन्न**=प्रसन्न, **पिकनीक**=पिकनिक। **3.** स्वयं करें। **करके सीखिए-**स्वयं करें।

अध्याय-5 ऐसा क्यों होता है?

2. (क) पिंजरे में आने पर तोते की स्वतंत्रता छिन जाती है, जिसके कारण वह छटपटाने लगता है। (ख) दिन के समय तारे छिप जाते हैं। (ग) चाँद के पृथ्वी के चारों ओर चक्कर लगाने तथा सूर्य के प्रकाश से प्रकाशित होने के कारण उसका आकार घटता-बढ़ता रहता है। (घ) जिनमें किसी अंग विशेष/वस्तु के बारे में विशेष ज्ञान प्राप्त हो, वे विज्ञानी कहलाते हैं। (ङ) इसके माध्यम से कवि विभिन्न घटनाओं के घटित होने के कारणों की जानकारी प्राप्त करने का संदेश देता है। **3.** (क) पलकें मुँद **जातीं आप ही**, जब मनुष्य सोता है। (ख) आँखें खोल **चला करते** वे, चतुर, सयाने, ज्ञानी। (ग) तुम भी **प्रश्न उठाओ**, **सोचो समझो**, पढ़कर जानो। **भाषा-बोध : 1. चाँद**=शशि, चन्द्र, चन्द्रमा; **फूल**= कुसुम, पुष्प, प्रसून; **मछली**=मत्स्य, मीन, जलचर; **आँख**=नेत्र, लोचन, नयन; **सूर्य**=सूरज, दिनकर, दिवाकर। **2. खिलना**=मुरझाना, **बाहर**=अंदर, **सोना**=जागना, **खोलना**=बंद करना, **ज्ञानी**=अज्ञानी, **प्रश्न**=उत्तर, **रोना**=हँसना, **साँझ**=सुबह, **3. तोता**=रोता, **मुसकाता**=जाता, **लगाती**=जाती, **लुटाते**=करते, **बदलता**=चमकता, **ज्ञानी**=विज्ञानी, **उठाओ**=सुलझाओ, **जाती**=लगाती। **4.** स्वयं करें। **करके सीखिए**-स्वयं करें।

अध्याय-7. तेनालीराम

2.(क) तेनालीराम राजा कृष्णदेव राय के दरबार में विदूषक थे। (ख) तेनालीराम ने अपनी पत्नी से कहा, ''अजी सुनती हो! आज दरबार में चर्चा हो रही थी कि आजकल बहुत चोरियाँ हो रही हैं। तुमने अपने जेवर सँभालकर रखे हैं ना?'' (ग) तेनालीराम ने चोरों को सबक सिखाने के लिए एक बड़ा-सा लोहे का संदूक जोर लगाकर घसीटते हुए कुएँ के पास लाए। बहुत मुश्किल से उसे उठाकर कुएँ में ढकेल दिया। छपाक... जोर से आवाज हुई। वे दोनों मुसकराते हुए घर के अंदर चले गए। (घ) रात भर चोरों का सरदार अपने साथियों के साथ कुएँ के पास आया। कुएँ के पास बाल्टियाँ और रस्सी पड़ी हुई थी। कुएँ में उतरने के लिए वे उसमें बचा थोड़ा पानी निकालने लगे ताकि संदूक निकाल पाएँ। पानी बहकर क्यारियों की ओर जाने लगा। इस प्रकार, बगीचे की सिंचाई होती रही। (ङ) मुसीबत के समय हमें बुद्धि से काम लेना चाहिए। **3.** (क) एक बगीचा (ख) एक बड़ा संदूक (ग) चक्की के दो पाट (घ) एक चतुर व्यक्ति (ङ) बुद्धि। **4.** (क) ✗ (ख) ✗ (ग) ✓ (घ) ✓ **भाषा-बोध : 1. सरदार**=सरदारनी, **बुद्धिमान**=बुद्धिमान, **सेवक**=सेविका, **पति**=पत्नी, **चोर**=चोरनी, **मालिक**=मालकिन। **2. घबरा**=घबराहट, **छटपटा**=छटपटाहट, **मुस्कुरा**=मुस्कुराहट, **कड़वा**=कड़वाहट, **लड़खड़ा**=लड़खड़ाहट, **बड़बड़ा**=बड़बड़ाहट, **फुसफुसा**=फुसफुसाहट। **3.** स्वयं करें। **करके सीखिए**-स्वयं करें।

अध्याय-8 नदी की आत्मकथा

2. (क) एक दिन नदी के पिता ने नदी से कहा, ''तुम्हारा जन्म यहाँ रहने के लिए नहीं हुआ है। तुम्हें अपने शीतल जल से लाखों-करोड़ों लोगों की प्यास बुझानी है। लोगों पर उपकार करना है, अपने कर्त्तव्य-पथ पर चलते हुए तुम्हें कभी रुकना नहीं है और अंतत: सागर में मिल जाना है।'' (ख) नदी जब सागर में मिलती है तो उसे इस बात का संतोष रहता है कि मैंने निरंतर गतिशील रहकर अपने कर्त्तव्य का पालन किया तथा मानवमात्र को पुत्रवत् स्नेह दिया। (ग) नदी बाधाओं से घबराती नहीं है। यदि उसके मार्ग में कोई अवरोध आ जाता है तो उसे भी अपने साथ बहाकर ले जाती है। वह अपने तेज प्रवाह से पत्थर के टुकड़े-टुकड़े कर देती है। (घ) संसार की सेवा करना ही नदी का धर्म था। उसका जल पाकर किसान तो धन्य हो गए। वह किसानों द्वारा बोए गए बीजों को अंकुरित करती है। धन-धान्य उगाकर लोगों का पेट भरती है, प्रकृति को सींचती है। (ङ) मनुष्य यदि यह संकल्प ले कि वह मुझे प्रदूषित होने से बचाएगा, तभी संसार का कल्याण हो सकता है। **3.** (क) पर्वतों के राजा (ख) भावुक (ग) दोनों से (घ) संसार (ङ) सागर। **4.** (क) ✓ (ख) ✗ (ग) ✓ (घ) ✓ (ङ) ✓ **भाषा-बोध : 1. अंक=**संख्या, गोद; **कर=**हाथ, टैक्स; **अर्थ=**कारण, मतलब। **2. हिमालय=**नगराज, पर्वतराज, हिमराज; **नदी=**सरिता, तरंगिनी, नद; **संसार=**विश्व, दुनिया, जगत; **जल=**पानी, नीर, तोय; **कन्या=**बालिका, लड़की, पुत्री। **करके सीखिए-**स्वयं करें।

अध्याय-9. चतुर चित्रकार

2. (क) उसने शेर को उसका चित्र बनाने का लालच दिया। (ख) उसने उससे उसका चित्र बनाने के लिए आँख बंद करने को कहा और इसका लाभ लेकर वह वहाँ से भाग गया। (ग) वह अपनी मूर्खता पर झुँझला रहा था। (घ) वह उसका शिकार करना चाहता था। (ङ) वह उसे धोखा देकर भाग गया था। **3.** (क) जंगल में (ख) शेर (ग) जंगल का सरदार। **4.** चित्रकार **सुनसान जगह में** बना रहा था **चित्र**। इतने ही में **वहाँ आ गया**, **यम राजा** का मित्र। (ख) बैठ गया वह **पीठ फिराकर**, **चित्रकार** की ओर। चित्रकार चुपके **से खिसका**, जैसे कोई **चोर**। (ग) शेर बहुत **खिसियाकर बोला**, **नाव जरा ले** रोक। **कलम** और **कागज** तो ले जा, रे **कायर डरपोक**। **भाषा-बोध : 2. सुनसान** जगह, **चतुर** चित्रकार, **सारे** अंग, **सुंदर** चित्र, **कुछ** हिम्मत, **मूर्ख** शेर। **2. खिसियाना=**नाराज होना, **झुँझलाहट=**खीज, **मूँदकर=**बंद करके, **बटोरना=**इकट्ठा करना, **जोश=**उत्साह **सुनसान=** वीरान **3.** (क) कलाकार (ख) मूर्तिकार (ग) चित्रकार (घ) सुनार (ङ) मोची। **करके सीखिए-**स्वयं करें।

अध्याय-10 अनमोल वचन

2. (क) मानव के दु:खी होने पर ही प्राय: आँखों से आँसू गिरते हैं। (ख) इसके खर्चने से यह बढ़ता जाता है। (ग) विद्या धन उद्यम से मिलता है। (घ) बिगड़ी बात नहीं बन सकती क्योंकि बिगड़ी बात की चोट जीवनपर्यंत रह जाती है। (ङ) मधुर वचन बोलने से श्रेष्ठ लोगों का अभिमान मिट जाता है। **3.** (क) औरन को शीतल करें, आपहुँ शीतल होय।-कबीर। (ख) रहिमन अँसुला नैन ढरि, जिय दुख प्रकट कोई।-रहीम। (ग) तनिक शीत जल सो मिटै, जैसे दूध उफान।-वृंद। **भाषा-बोध : 1. परलय=**प्रलय, **सरवर=**सरोवर, **सीतल=**शीतल, **अपूरब=**अपूर्व, **सुरसति=**सरस्वती, **पौन=**हवा, **बानी=**वाणी, **गेह=** गृह, **2. पल=**क्षण, **पौन=**हवा, **नीर=**जल, **उत्तम=**श्रेष्ठ, **भेद=**रहस्य, **सुरसति=**सरस्वती, **औरन=**दूसरे, **परमारथ=**परोपकार **3. व्यक्तिवाचक संज्ञा :** कबीरदास, रहीम, अशोक; **जातिवाचक संज्ञा :** मक्खन, घर, सरोवर; **भाववाचक संज्ञा :** अमीरी, अभिमान, शीतलता। **करके सीखिए-**स्वयं करें।

अध्याय-11 दिल्ली की सैर

2. (क) नई दिल्ली में प्रमुख दर्शनीय स्थल हैं—संसद भवन, राष्ट्रपति भवन, इंडिया गेट आदि भव्य स्मारक हैं। कृषि भवन, विज्ञान भवन, आकाशवाणी केंद्र और सुप्रीम कोर्ट नई दिल्ली की शान हैं। यहीं पर बिड़ला मंदिर भी है। (ख) पुरानी दिल्ली में देखने योग्य इमारतें हैं—लाल किला, जामा मस्जिद, हुमायूँ का मकबरा आदि। (ग) कुतुबमीनार सुंदर बाग-बगीचों से घिरी हुई है जो लोगों के मन को मोह लेती है। यह एक सुंदर पिकनिक स्थल बन चुकी है। (घ) लौह-स्तंभ की विशेषता है कि इस पर सैकड़ों वर्षों के बीतने पर भी हवा, पानी और धूप का कोई प्रभाव नहीं पड़ा। (ङ) दिल्ली के प्रमुख धार्मिक स्थल हैं—बिड़ला मंदिर, गौरी-शंकर मंदिर, सिक्खों का शीशगंज गुरुद्वारा, जैन मंदिर इत्यादि। **3.** (क) दिल्ली (ख) इंद्रप्रस्थ (ग) दो (घ) कुतुबमीनार (ङ) लौह-स्तभ को । **4.** (क) लौह-स्तंभ (ख) सिरी (ग) गुरुद्वारा (घ) इंद्रप्रस्थ (ङ) दिल्ली। **भाषा-बोध : 1.** स्वयं करें। **2.** (क) वर्तमान काल (ख) भूतकाल (ग) भविष्यत् काल (घ) भूतकाल। **3.** (क) आ गई (ख) मोह लेती है (ग) देख लिया (घ) साथ चल दिए (ङ) समाप्त हुई थी। **करके सीखिए-**स्वयं करें।

अध्याय-12 शुद्द पानी की खोज

2. (क) झील के पास पहुँचकर रॉकी बोला, ''नहीं, यह पानी मेरे किसी काम का नहीं है। लोग साबुन और हानिकारक रसायनों से इसे अशुद्ध कर रहे हैं।'' (ख) कारखाने अपना बचा हुआ बेकार रसायन नदी में बहा देते हैं, इसी से यह नदी का पानी जहरीले रसायनों से भरा हुआ है। (ग) रॉकी शुद्ध पानी लेने अंटार्कटिका गया। (घ) रॉकी जाते-

जाते मीना को चेतावनी दे गया कि याद रखना तुम हर बार एक गिलास पानी लेने अंटार्कटिका नहीं जा सकोगी।'' (घ) इस पाठ से हमें शिक्षा मिलती है-जल ही जीवन है।, सदैव जल का सदुपयोग करें। **3.** (क) छत पर (ख) शुद्ध (ग) झील पर (घ) पृथ्वी (ङ) अंटार्कटिका । **4.** (क) ✗ (ख) ✗ (ग) ✓ (घ) ✓ (ङ) ✓ **भाषा-बोध : 1.** विद्या+आलय=**विद्यालय,** भोजन+आलय=**भोजनालय**, संग्रह+आलय=**संग्रहालय**, कार्य+आलय=**कार्यालय**, अनाथ+आलय=**अनाथालय**, पुस्तक+आलय=**पुस्तकालय**। **2. जहर=**जहरीला, **रंग=**रंगीला, **चमक=**चमकीला, **सुर=**सुरीला, **खर्च=**खर्चीला, **बर्फ=**बर्फीला। **3. सुबह=**प्रातः, भोर; **घर=**भवन, गृह; **पानी=**जल, नीर; **आकाश=**नभ, आसमान; **पृथ्वी=**भू, धरा। **4.** (क) वह (ख) वे (ग) मेरा (घ) मैं (ङ) तुम। **करके सीखिए-**स्वयं करें।

अध्याय-13 जहाँ चाह वहाँ राह

2. (क) 1936 ई० में ओलंपिक समारोह में जब लकड़ी-से सूखे पैरों वाले एक अपंग व्यक्ति ने जब श्रेष्ठ धावक का खिताब जीतकर दूसरा स्थान प्राप्त कर रजत पदक जीता तो सारी दुनिया की आँखें फटी-की-फटी रह गई। (ख) बच्चे के माता-पिता इसलिए निराश हो गए कि लंबी दौड़-धूप और इलाज के बाद आखिरकार डॉक्टरों ने निराश होकर यह कह दिया कि यह बच्चा अब कभी चल नहीं सकेगा। (ग) ग्लेन कनिंघम ने समाज-सेवा के क्षेत्र में बड़े-बड़े कीर्तिमान स्थापित किये। उसने अपने जीवन और उपलब्धियों से विकलांगों को एक सम्मानित और पूर्ण जीवन जीने की प्रेरणा प्रदान की है। (घ) 1933 में कनिंघम ने आठ सौ एकड़ का एक फार्म खरीदा और जी-जान से खेती में जुट गया। अपनी मेहनत से उसने अच्छा पैसा कमाया। खेती की आमदनी से उसने एक आश्रम की स्थापना की। इस आश्रम ने लगभग दस हजार ऐसे विकलांग बच्चों को नया जीवन दिया जिन्हें समाज ने कुछ न कर सकने लायक समझकर एक तरफ कर दिया था। (ङ) किसी चीज की चाहत ही उसकी प्राप्ति के लिए विभिन्न प्रकार की राह दिखाती है। **3.** (क) रजत पदक (ख) मंद (ग) आठ (घ) आठ (ङ) दोनों सही। **4.** (क) ✗ (ख) ✗ (ग) ✗ (घ) ✓ (ङ) ✗ **भाषा-बोध : 1.** स्वयं करें। **2.** (क) प्रतिभाशाली (ख) अभूतपूर्व (ग) सर्वश्रेष्ठ (घ) विश्वयुद्ध (ङ) अपंग। **करके सीखिए-**स्वयं करें।

अध्याय-15 हार की जीत

2. (क) बाबा भारती को अपने घोड़े को देखकर वहीं आनंद प्राप्त होता था जो एक माँ को अपने बेटे को और किसान को अपने लहलहाते खेत को देखकर प्राप्त होता है। (ख) खड्गसिंह ने भी घोड़े की प्रशंसा सुनी तो वह बाबा भारती के घोड़े को देखने के लिए बेचैन हो उठा और एक दिन दोपहर में बाबा भारती के पास पहुँच गया। (ग) घोड़े को देखकर खड़गसिंह ने कहा कि उसने ऐसा सुंदर घोड़ा देखा ही न था। उसने बाबा से कहा, ''बाबा जी! मैं यह घोड़ा आपके पास नहीं रहने दूँगा।'' (घ) बाबा भारती ने खड्गसिंह से प्रार्थना की कि यदि इस घटना का पता लोगों को चल जाएगा को कोई व्यक्ति किसी गरीब पर विश्वास नहीं करेगा।'' मेरी यह प्रार्थना है कि ''इस घटना को किसी के सामने प्रकट न करना।'' (ङ) घोड़े को अस्तबल में बँधा देखकर बाबा भारती प्रसन्नता से अंदर की ओर दौड़े और घोड़े को देखकर उसके गले से लिपटकर इस प्रकार रोने लगे मानो कोई पिता बहुत दिन बाद अपने बिछुड़े हुए पुत्र से मिल रहा हो। **3.** (क) सुलतान (ख) एक प्रसिद्ध डाकू (ग) अस्तबल में (घ) लगाम (ङ) ऊँचे। **4.** (क) ✓ (ख) ✓ (ग) ✗ (घ) ✗ (ङ) ✓ **भाषा-बोध : 1.** स्वयं करें। **2. बात=**बातें, **घोड़ा=**घोड़े, **घटना=**घटनाएँ, **महीना=**महीने, **कंगला=**कंगले, **पैसा=**पैसे, **आँख=**आँखें, **चीख=**चीखें। **3. घोड़ा=**अश्व, घोटक; **बेटा=**पुत्र, तनय; **आँख=**नेत्र, नयन; **माँ=**जननी, अम्बा; **वृक्ष=**पेड़, पादप। **करके सीखिए-**स्वयं करें।

अध्याय-16 पिता का पत्र, पुत्र के नाम

2. (क) गाँधी जी ने संसार में निम्न तीन बातों को महत्त्वपूर्ण बताया है—अपनी आत्मा का, अपने आप का और ईश्वर का सच्चा ज्ञान प्राप्त करना। (ख) गाँधी जी ने पत्र में अपने पुत्र को गुजराती और अंग्रेजी के चुने हुए भजनों एवं कविताओं का एक संग्रह तैयार करने के लिए कहा है। (ग) सूर्योदय से पहले उठकर प्रार्थना करना बहुत ही अच्छा है—प्रयत्नपूर्वक एवं निश्चित समय पर ही प्रार्थना करनी चाहिए। (घ) नियमितता जीवन में आगे चलकर बहुत ही सहायक सिद्ध होती है। (ङ) इस पत्र से यह सीख मिलती है कि काम की अधिकता से मनुष्य को घबराना नहीं चाहिए और न यह सोचना चाहिए कि यह कैसे होगा और पहले क्या करूँ? शांत चित्त से विचारपूर्वक तुमने यदि सद्गुणों को प्राप्त करने की चेष्ठा की तो वे तुम्हारे लिए बहुत उपयोगी और मूल्यवान प्रमाणित होंगे। **3.** (क) एक (ख) दूध-साबूदाना (ग) गरीबी में (घ) गणित-संस्कृत। **4.** (क) ✓ (ख) ✗ (ग) ✗ (घ) ✗ (ङ) ✗ **भाषा-बोध: 1.** स्वयं करें। **2. विशेष=**सामान्य, **संतोष=**असंतोष, **योग्य=**अयोग्य, **आशा=**निराशा **कठिन=**साल, **उपयोगी=**अनुपयोगी, **सुखद=**दुखद, **उदार=**अनुदार। **3.** नियम-पूर्वक, मूल्य-वान, महत्त्व-पूर्ण, जिम्मे-दारी, साबू-दाना। **करके सीखिए-**स्वयं करें।

अध्याय-18 ग्रामीण जीवन

2. (क) केशव अपने मित्र के पत्र का उत्तर शीघ्रता से इसलिए न दे सका क्योंकि इस बार वह गरमी की छुट्टियों में अपने नाना और नानी के पास गाँव चला गया था। (ख) गाँववासियों मे 'सादा जीवन, उच्च विचार' की झलक मिलती है। ये हृदय से सीधे, सच्चे और पवित्र होते हैं। प्यार और स्नेह इनके अंदर कूट-कूटकर भरा होता है। छल-कपट से तो ये कोसों दूर रहते हैं। ये लोग बहुत ही ईमानदार और अतिथि का सत्कार करने वाले होते हैं। (ग) गाँव में केशव बहुत जल्दी उठ जाता था फिर दैनिक क्रिया से निवृत्त होकर दूध पीता और मामा के साथ खेतों की ओर निकल पड़ता था। (घ) ग्रामीण लोग नए रोजगार तलाशने के लिए शहर की ओर जा रहे हैं। (ङ) हमें भी अपने जीवन में 'सादा जीवन, उच्च विचार' के भाव रखने चाहिए। **3.** (क) माधव (ख) गाँवों में (ग) शुद्ध (घ) शिक्षा (ङ) डॉक्टर **4.** (क) ✗ (ख) ✓ (ग) ✗ (घ) ✗ (ङ) ✓ **भाषा-बोध : 1. ज्ञान=** अज्ञान, **शुभ=**अशुभ, **समय=**असमय, **पवित्र=**अपवित्र, **संतोष=**असंतोष, **सत्य=**असत्य। **2. स्नेह=**स्नेही, **अनुभव=**अनुभवी, **कपट=**कपटी, **छल=**छलीवा, **मेहनत=**मेहनती, **आत्म-संतोष=**आत्म-संतोषी **3.** गाँव में ही मैंने प्रकृति का अद्‌भुत रूप देखा। सचमुच जो आनंद मुझे वहाँ के बाग-बगीचों, कच्चे लिपे-पुते घरों में प्राप्त हुआ, वह शहर में कभी नहीं प्राप्त हुआ। **करके सीखिए-**स्वयं करें।

अध्याय-19 चरवाहे का बचपन

2. (क) वह दिनभर वन में गाय-भैंस चराता था। (ख) थोड़े बहुत कृषि कार्य तथा पशुपालन से उसका भरण-पोषण होता था। (ग) आपस में खेलकूद व हँस-खेल कर उनका श्रम दूर हो जाता है। (घ) वे शब्द विशेष से पशुओं को बुलाते थे। (ङ) चरवाहा अपने बचपन को लौटाने की बात कर रहा है। **3.** (क) **घर आकर ब्यालू में माँ** से, **एक पाव पय पाता था**। (ख) **बंदर सम पेड़ों पर चढ़ते**, **डालें कभी हिलाते** थे। (ग) **मैं न मरूँ पाऊँ यदि उसको**, **है जीवन का यत्न यही**। **4.** (क) घर आकर ब्यालू में माँ से, एक पाव पय पाता था। (ख) देख किसी का ठाट न हमको, ईर्ष्या कभी सताती थी। (ग) किसी तरह खेती पाती से, था संसार चल जाता। (घ) आते-जाते समय हमारा, मानस-हंस मोद पाता। **भाषा-बोधः 1.** स्वयं करें। **2. भूमि=**पृथ्वी, घटा; **निर्मल=**स्वच्छ, साफ; **संसार=** दुनिया, विश्व; **जीवन=**जिंदगी, प्राण; **साथी=**मित्र, सखा; **3.** दीन दशा=**दशा, दीन;** निर्मलमन = **मन, निर्मल;** गहरी छाया = **छाया, गहरी;** निश्ंचित भाव = **निश्ंचित, भाव;** हरी-भरी भूमि = **भूमि, हरी-भरी**। **करके सीखिए-** स्वयं करें।